



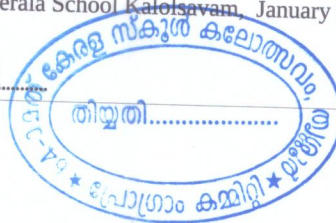
विषय → मैं कौन हूँ ?

मेरी पहचान...?

एक बार की बात है, भारत के उत्तर भाग में एक छोटा और समृद्ध गाँव हुआ करता था जिसका नाम था बोलपूर। कहने को तो यह एक छोटा सा गाँव था, लेकिन यह बड़ा अद्भुत था, और आकर्षक भी। बड़ा ही मनमोहक गाँव था बोलपूर। उस गाँव की तरह ही वहाँ के लोग भी बड़े ~~स्वच्छ~~ अच्छे और दयानु थे। वहाँ के बच्चे और बड़े बहुत इमान्दार थे। बोलपूर के निवासी - बड़े इमान्दारी के पैसे कमाते और बच्चों बड़ों का हाथ ~~ख~~ बटाते या ठूसी - खुशी खेलते रहते। वैसे ही एक दिन, जब बच्चों नदी तट पर खेलने आए तब वहाँ बारिश की वजह से मिट्टी फिसलने वाली बन गई थी। लेकिन बच्चों कीचड़ से ही खेलने लगे। यह देख, पास में एक वृक्ष के नीचे खड़ा शम अपने मित्र रघु की कहता है, "अरे, रघु! वो देख, तेश भाय शश मिट्टी में खेल रहा है। शम और रघु, दोनों ही

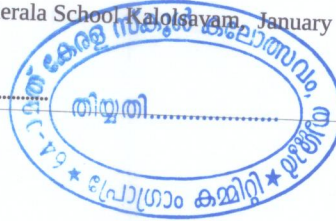


बारह वर्ष के लड़के थे। वे उन बच्चों पर नजर रखने आए थे। वह तीन बच्चे - मनु, राज, और लक्ष, उनकी निगरानी में थे। राज, रघु का छोटा भाई था। राम की बात सुनकर रघु बोला, "खेलने दे उसे, जब कपड़े गंदे करने के लिए उसे माँ से डाँट पड़ेगी तब समझ जाएगा"। इतना कहकर वे दोनों अपना काम - अर्थात् बच्चों की निगरानी करते रहे। बच्चे वहीं खेलते रहे, और दोनों लड़के एक दूसरे से बात करने में व्यस्त हो गए। खेल-खेल के बीच, अचानक से मनु का पैर फिसला और वह नदी में गिर पड़ा, उसका सिर एक बड़े से पत्थर पर टकराया और वह चिल्लाया, "आह.....!" मनु की चीख सुनते ही राम और रघु दौड़कर नदी के किनारे पहुँचे। राम ने नदी में छलाँग लगाई और मनु को बचा लिया, लेकिन तब तक मनु बेहोश हो चुका था। राम ने रघु से कहा, "तुम बाकी सब का ध्यान रखो, मैं मनु को लेकर घर जाता हूँ, मेरे मामा डॉक्टर हैं" इतना कहने के बाद राम, मनु को गोद में लिए अपने घर की ओर भागा। घर पहुँचते ही उसने अपने मामा को आवाज़ दी,



उन्हें सारी बात बताई, और मनु को उन्हें सोप दिया।
 बहुत समय तक शम के माँ ने मनु का
 निरीक्षण किया। मनु के सिर पर लगी चोट पर दवा
 लगाई, पट्टी बाँधी और उसे होश आने का
 इंतज़ार करने लगे। शम और उसकी माँ
 भगवान से प्रार्थना करने लगे कि मनु सही
 सलामत हो। वे जानते थे कि चोट गहरी है, फिर भी
 उन्होंने हिम्मत नहीं हारी। इसके बीच मनु की माँ
 रोते हुए आई। उन्हें बस अभी खबर मिली थी कि
 उनका बेटा बेहोश हो गया। वह रोते हुए, शम की माँ
 के गले लगी और कहा, "क्या हुआ मेरे बेटे को, यह
 बेहोश क्यों है? उठ जा मेरे लाल, तू तो मेरा
 एक मात्र कारण है जीने का। उठ जा...." इतना सुन
 शम की माँ उन्हें समझा उसीद देकर कहती है,
 "क्यों रो रही हो बहन, यह तो बस बेहोश है, अभी
 उठ जायेगा।" इतना कहकर शम की माँ ने
 मनु की तरफ उँगली दिखाई। मनु को होश आ
 रहा था।

मनु ने आँखें खोली। यह देख मनु की
 माता की आँखों में आँसू भर आए। उन्होंने बोला,



"मेरा बच्चा!" मनु दर्द से तिनसिनाया और अपने आस-पास सभी को बड़े आश्चर्य से देखने लगा। उसके चहरे पर दर्द की लकीरें थीं। उसके माथे पर पट्टी बँधी हुई थी। उसने अपने आस-पास देखा और फिर हल्की आवाज़ में बोला, "यह मैं कहाँ हूँ?" "कौन है हो आप लोग" यह सुनकर मनु की माँ की आँखें आश्चर्य के भाव से बड़ी हो गयीं और आसू बहते रहे। तब डॉक्टर ने कहा, "इसकी स्मृति नष्ट हो चुकी है, इसे अब कुछ याद नहीं। सिर पर चोट लगने के कारण हुआ है यह सब।" यह सुनकर मनु की माँ रोने लगती है क्योंकि मनु उनका एक लोता बेटा था जिसके साथ रोसा हुआ। उनका मनु के अलावा कोई नहीं था, उनके माता, पिता और पति स्वर्ग सिधार गए थे।

मनु की माता को रीते देख, राज के मामा कहने हैं, "धबधबा नहीं, जैसे-जैसे इसके माथे की यह चोट ठीक होती जाएगी, वैसे-वैसे उसकी स्मृति भी लौट आएगी। इसलिए मत रोना।" यह सुनकर मनु की माँ थोड़ी आश्वासित होती है। लेकिन उनके आसू नहीं रुकते।

यह देख मनु कहता है, "आप क्यों रो रही हो?"
यह सुनकर उसकी माँ अपने आसू छुपिपाकर
कहती है, "कुछ नहीं, ऐसे ही..." मनु पूछता है, "अच्छा!
लेकिन मैं कौन हूँ???" यह प्रश्न सुनकर मनु की
माँ जोरों से रो पड़ती है और अपने बेटे की स्मृतियाँ
वापस लाने, और उसकी देखभाल करने का ठान लेती
है। और कई सहिने बाद, मनु की स्मृतियाँ आ
जाती है। और वह अपने अपनी जिंदगी खुशी से
अपनी माँ के साथ जीता है।